ISSN : 2319-8095
Progressive Research Journal
Vol.I No.I December 2012

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार एवं प्रतिरुप : जनपद सिद्धार्थनगर का एक भौगोलिक अध्ययन

डा. शिष्टपाल सिंह*
डा. एस.एन. सिंह**

अधिवास मानव की मूलभूत आवश्यकताओं मे से एक हैं। गृह अधिवास के अध्ययन का केन्द्रीय तत्व होता है वस्तुतः भौगोलिक शब्दावली में अधिवास का अर्थ बसे हुए क्षेत्र से हैं जिसके अन्तर्गत गाँवों के गृह विन्यास से लेकर खेत-खलिहान, गली, मार्ग आदि सभी तत्व समाहित है। चूँकि अधिवास के अध्ययन में गृहों के प्रकार एवं वितरण का विशिष्ट महत्व है, परन्तु अभी भी गृहों के प्रकार एवं वितरण का अध्ययन जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ प्रश्न हैं। मानव विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन स्तर में मात्रात्मक परिवर्तन के साथ गुणात्मक परिवर्तन लाना हैं। इस दृष्टिकोण से गृहों के प्रकार एवं प्रतिरुप का अध्ययन भौगोलिक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं, जो भूगोल के कल्याणकारी पक्ष से जुड़ा हुआ हैं।

किसी भी क्षेत्र में मकानों का आकार, उनका विन्यास, निर्माण, पदार्थ, आकृति इत्यादि उस क्षेत्र के प्राकृतिक एवं सामाजिक तत्वों का प्रतिफल हैं। भौगोलिक परिवेश के अनुरुप ही गृहों का स्वरुप परिलक्षित होता हैं। चूँकि घर का प्रकार जीवन की गुणवत्ता से जुड़ा हुआ प्रश्न हैं। अतः इस प्रकार के अध्ययन का महत्व सन्तुलित एवं सम्यक नियोजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इधर विगत वर्षो में परिवहन एवं संचार के साधनों का तीव्र विकास हुआ फलस्वरुप मकानों के विन्यास एवं उसकी आकारिकी में संरचनात्मक परिवर्तन हुआ हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में जनपद-सिद्धार्थनगर के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिवासों के प्रकार एवं वितरण, अधिवासों की विशेषताएं एवं आर्थिकी का अधिवासों पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए कुछ गाँवों के (बेलवा, महदेवा, कन्दवा, मलपार, महला, खुरहुरिया, खमरिया, केसारा, करौती) अधिवासों का अध्ययन किया गया हैं।

अध्ययन क्षेत्र – अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक विस्तार 27°4' उत्तरी अक्षांश से 27°30' उत्तरी अक्षांश तथा 82°23' पूर्वी देशान्तर से 83°16' पूर्वी देशान्तर के मध्य हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह गंगा के विशाल मैदान का एक लघु भाग हैं। इसके उत्तर में नेपाल राष्ट्र, दक्षिण में बस्ती जनपद, पूरब में महराजगंज तथा पश्चिम में बलरामपुर जनपद स्थित हैं। शोध क्षेत्र की सम्पूर्ण भूमि राप्ती और उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से निर्मित हैं। राप्ती जनपद की सबसे बड़ी नदी है, जो पूरब की ओर प्रवाहित होती हैं।

प्रशासनिक दृष्टि से यह उत्तर प्रदेश राज्य के बस्ती मण्डल के अर्न्तगत शामिल हैं। जनपद में पाँच तहसील, चौदह विकास खण्ड, 1015 ग्राम पंचायते तथा 152 न्याय पंचायते हैं। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 29558 वर्ग किमी. हैं।

गृहों का स्वरुप – भौगोलिक तत्व के रुप में गृह के अर्न्तगत मानव द्वारा निर्मित वास गृहों (जो साधारण कुटी से लेकर अट्टालिकाओं तक) के अतिरिक्त दूसरी मानवीय संरचना जहाँ मानव समवेत होता है और अपनी चीजों को एकत्रित करता है (उदाहरणार्थ-विद्यालय, कारखाने, यंत्रागार, पूजास्थल एवं विविध प्रकार के गोदाम इत्यादि) को भी सम्मिलित किया गया हैं। इस प्रकार गृह सांस्कृतिक भू-दृश्य के प्रमुख तत्व होने के साथ मानव और उसके वातावरण के जटिल सम्बन्धों को परिवर्तित करते हैं। अतः भूगोलवेत्ता के लिए गृह एक मुख्य

* प्रवक्ता, भूगोल विभाग, एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर (उ.प्र.)।
** वरिष्ठ प्रवक्ता, भूगोल विभाग, एम.एल.के.पी.जी. कालेज, बलरामपुर (उ.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

तत्व है जो कि प्रदेश की भौतिक अवस्थाओं और उसके निवासियों की गुणवत्ता को प्रकट करता है। अत यह निश्चित है कि गृह मानव के आश्रय स्थल हैं और आश्रय मानव जीवन की महत्वपूर्ण और मूल भूत आवश्यकता है। अत विश्व के प्रत्येक भाग में अधिवास भू–दृश्य में गृह एक मौलिक संघटन हैं, जिसमें ग्राम्य जनसंख्या व पशुओं को शरण मिलती हैं एवं विविध प्रकार के सामानों की सुरक्षा होती हैं। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए मानव ने उपलब्ध पदार्थों का प्रयोग करते हुए देशकाल एवं परिस्थिति के अनुरुप विविध प्रकार के आश्रयों का निर्माण किया और अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए मन्दिर, राजमहल, सरकारी भवन तथा अनेक प्रकार की रचनायें की। इस तरह आश्रय भूतकाल की सांस्कतिक धरोहर और परम्परा के उत्तरजीवित अवशेष हैं।अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश निवास गृह न केवल व्यवसाय व जाति के अनुरुप नियोजित किये जाते है बल्कि ग्रहों, नक्षत्रों एवं धार्मिक भावना को भी ध्यान में रखा गया है। गृह निर्माण के लिए संस्थिति, दिशा, शुभदिन पर मूहुर्त द्वारा आदि के चुनाव की परम्परा पायी जाती हैं। आवास में ऑगन का अत्यधिक महत्व हैं। भारत में अधिकांश ग्रामीण परिवारों का जीवन ही ऑगन में ही केन्द्रित होता हैं। शोध क्षेत्र में अधिकांश ऑगन या तो दो या चौतरफे बने हुए कमरों से घिरे या घरों के पीछे स्थित होते हैं। उच्चवर्गीय परिवारों में ऑगन। उपयोग पर्दे के लिए, निम्न वर्गीय परिवारों में तमाम घरेलू उपकरण, भोजन करने या कभी–कभी गर्मियों में भोजन बनाने के लिए किया जाता हैं। यहाँ बैठकर पर्दानशी स्त्रियाँ, धूप, हवा आदि का सेवन करती हैं, बर्तन धोये जाते है, कपड़े सुखाये जाते हैं और छोटे शिशु ऑगन में ही बाल सुलभ कियायें करते हैं।

आवास एवं प्रकार्य– ग्रामीणवासी अपने गृहों का निर्माण प्रायः स्थानीय या समीपवर्ती भाग में उपलब्ध निर्माण पदार्थों से करते हैं। हलांकि भवन निर्माण की यह विधि एक लम्बी परीक्षण और त्रुटिगत प्रक्रिया से गुजरती है, जिसमें उपलब्धता, उपयोगिता टिकाऊपन, कुल लागत तथा अन्य पक्षों पर ध्यान दिया जाता हैं। वस्तुतः ग्रामवासी अपने गृहों का निर्माण एक साथ न करके उसे समय–समय पर पूरा करते हैं। ग्रामीण अधिवासों के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि ग्रामीण गृह के मुख्य अंग हैं–

1. **घर :–** यह आवासीय गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र स्थल हैं, जहाँ परिवार के सदस्य रहते हैं तथा भोजन बनाये जाते हैं। महिलायें प्रायः पटौहा कमरों (प्रथम मंजिल के तुरन्त नीचे बना अन्दर कमरा) में रहती हैं। जो गर्मी में अपेक्षाकृत ठण्डा रहता हैं। सामान्यतया गृहों का आकार आयताकार होता हैं। जिसे गर्भ गृह कहा जाता है। घरों के संस्थिति का चुनाव करते समय पुरोहित की राय लेने व गृह प्रवेश के समय धार्मिक कर्मकाण्ड किये जाते हैं। अतः ग्रामीण मकानों को जानना उनके निवासियों को जानना माना जाता हैं।
2. **ऑगन :–** यह मकान का एक प्रमुख अंग हैं। जो मकान के मध्य आयताकार खुला स्थान होता हैं, जहाँ अनेक सांस्कारिक कर्म भी सम्पन्न किये जाते हैं। इसी स्थान पर ही गपशप, धूपसेवन, बर्तन की सफाई आदि की जाती हैं।
3. **बैठका :–** मध्य और उच्च वर्ग की लोगों के मकानों में मुख्य घर के समीप पृथक रुप से एक बैठका का निर्माण किया जाता हैं,जबकि निम्न वर्ग के लोग बरामदें के एक कोने को घेर कर बैठका बना देते हैं।
4. **बरामदा :–** आँगन के चतुर्दिक प्रायः बरामदे बनाये जाते हैं। जिसका एक भाग पुरुष वर्ग के प्रयोग में आता है। दूसरा भाग घर की महिलायें प्रयोग में लाती हैं।
5. **भुसैला :–** यह मकान के सामने प्रायः टाटियों, फूस, छप्परों, खपरैलों से निर्मित होता हैं। जिसमें पशुओं व उनकी खानगी रखी जाती हैं।
6. **चौका या रसोई :–** ग्रामीणवासियों का रसोई घर प्रायः मौसम के अनुसार बदलता रहता हैं। ग्रीष्मकाल में आंगन

Scanned with OKEN Scanner

बरामदे के कोने मे जबकि वर्षा एवं शीतकाल में कमरे में स्थानान्तरित कर दिया जाता हैं।

7. दरवाजा :– प्रवेश एवं निकास के लिए मुख्य दरवाजा मकानो के विभिन्न भागों में बनाया जाता है। ये दरवाजा सामने की दीवाल के मध्य मे नहीं रखे जाते हैं क्योंकि इसे अशुभ माना जाता है। दरवाजा दक्षिण की दिशा में नहीं रखे जाते हैं।मकानो के प्रकार व वितरण मकान या गृह एक विशिष्ट रचना है जिस पर उपलब्ध निर्माण सामग्री और उसके प्रति मानव की अनुक्रिया का व्यापक प्रभाव दिखाई देता हैं। गृह को एक या एक से अधिक गृहस्थों के आवास क्षेत्र के रुप में अभिकल्पित किया जाता हैं। भारतीय जनगणना विभाग ने झोपड़ो को प्रथम गृह के रुप में माना हैं, जबकि कुछ विद्वानों का मत है कि मुख्य मकान के चतुर्दिक निर्मित विभिन्न झोपडियों को एक ही मकान मानना चाहिए। मकान के प्रकारों का अध्ययन अधोलिखित आधारों पर किया गया है–

A- अमाप के आधार पर, B- आकृति के आधार पर,

C- निर्माण पद्धार्थ के आधार पर, D- लोक परम्परा के आधार पर,

E- सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक गुणों के आधार पर।

सारणी –1 सिद्धार्थनगर जनपद में मकानों का अमाप (कमरों की संख्या पर आधारित) प्रतिशत में –

जनपद	एक कमरें	दो कमरें	तीन कमरें	चार कमरें	पॉच कमरें
सिद्धार्थनगर	24.60	25.60	18.90	13.20	17.20

सारणी संख्या–2

सामग्री के आधार पर मकानों का प्रतिशत

जनपद	घास–फूस	कच्ची दीवार	कच्ची ईट	पक्की ईट
सिद्धार्थनगर	0.6	20.9	43.3	21.6

ग्रामीण अधिवासों का प्रतिरुप – अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण अधिवासों के प्रतिरुप में काफी भिन्नता दिखाई पड़ती हैं। अधिवासों के प्रतिरुप पर उच्चावच, नदी, सडक, रेलवे लाइन एवं प्राचीन अधिवास का प्रभाव दृष्टिगोचर हैं। जिसके फलस्वरुप रेखीय, चौकोर, त्रिभुजाकार, आयताकार आदि प्रकार के अधिवास देखने को मिलते हैं।

ग्रामीण अधिवासों के प्रकार – ग्रामीण अधिवासों के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरुप, परस्पर दूरी, आकृति एवं आकार के विश्लेषण तथा उसके आधार पर वर्गीकरण करने हेतु आर.बी. सिंह (1975,पृष्ठ 32–34) द्वारा प्रयुक्त विधि से सहारा लिया गया हैं। उपर्युक्त विश्लेषणों के आधार पर जनपद के अधिवासों को तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता हैं –

. **सघन अधिवास 2. अर्द्ध सघन अधिवास 3. अपखण्डित अधिवास**

. **सघन अधिवास –**

अध्ययन क्षेत्र में सघन अधिवास बाढ़ग्रस्त खादर क्षेत्रों से थोड़ा हटकर दिखाई पड़ती हैं। सघन आबादी के गॉव दूर–दूर हैं, किन्तु आकार बड़ा हैं तथा मकानों के मध्य की दूरी, बहुत कम हैं। शोध क्षेत्र के चयनित ग्रामों (बेलवा, महादेवा, करौती, महला आदि) में सघन अधिवास देखने को मिलते हैं।

. **अर्द्धसघन अधिवास –**

ऐसे अधिवास बाढ़ से कम प्रभावित उन क्षेत्रों में पाये जाते है जो सघन अधिवासों के समीपवर्ती क्षेत्र हैं। इस तरह के अधिवास केसारा, बरगदवा, धुसरी आदि गॉवों में देखने को मिलते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

3. अपखण्डित अधिवास–

इस तरह के अधिवास छोटे–छोटे पुरवे अथवा टोला के रुप में बसे हुए हैं। जिसके अर्न्तगत कहीं–कहीं एकांकी झोपड़ी भी मिलती है। ऐसे अधिवासों में गृहों के मध्य दूरी अधिक रहती हैं। इस प्रकार के अधिवास शोध क्षेत्र में बडगो, मध्यनगर, केसारी, बगनी आदि गॉवों में दृष्टिगोचर होते हैं।

शोध क्षेत्र के गॉवों में मकानों के आकार–प्रकार एवं निर्माण सामग्री में विभिन्नता दिखाई पडती हैं। बाढ पीड़ित क्षेत्रों में घास–फूस एवं मिट्टी के मकानों की अधिकता हैं जबकि उन क्षेत्रों पक्के मकानों की बाहुल्यता है जो बाढ नहीं आती हैं। उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र तराई क्षेत्र का भाग हैं। जिसके कारण यहॉ पर अधिवास कमबद्ध रुप से वितरित हैं। प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक तथ्यों का भरपूर प्रभाव अधिवासों के वितरण पर पड़ा हैं। बूढी राप्ती, राप्ती नदियों का इस क्षेत्र के अधिवासों पर विशेष प्रभाव दिखाई पड़ता हैं। जिसे बैठने, बातचीत करनें, अलाव तापने इत्यादि कार्यो में प्रयुक्त करते हैं। घर की महिलाओं के लिए विशेष बहुओं के लिए यह निषिद्ध स्थान होता है।

RESUME

Types and Pattern of Rural Settlement : A Geographical Study of Siddhartha Nagar District (U.P.).

Dr. Shist Pal Singh & Dr. S.N. Singh
Deptt. of Geo. M.L.K.P.G. College, Balrampur.

The Paper in hand intens to analysis of types and pattern of Rural Settlement of Siddhartha Nagar District. The Settlement types and pattern are effective on human's economical, social and political condition. The conclusion from the study that settlement are effective on quality of life. The study is based on secondary data collected through census and Govt. publications and self survey.

Reference

1– सिंह आर.बी. रावत (1975) : राजपूत प्लान सेप्लिमेन्ट्स इन वाराणसी डिस्ट्रिक्ट, एन. जी.एस. आई. वाराणसी, रिसर्च पब्लिकेशन, पृ. सं.–11

2– सिंह आर.वाई. : बराई बिलेज, चिरई गॉव, ब्लाक–वाराणसी ए केस स्टडी इन सोसियो–इकोनामिक ज्योग्राफी।

3– अहमद ई. (1962) : रुरल सेटिलमेन्ट टाइप इन यू.पी. एन्लरा एशोसिएशन आफ अमेरिकन ज्योग्राफर, 42 पृष्ठ सं. 232

4– सिंह एस.एन. (2010) : जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल'' राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

5– तिवारी रामचन्द्र (1997) : अधिवास भूगोल इलाहाबाद''।

6– सिंह अनिल कुमार (1980) : जनपद बलिया : अधिवास भूगोल का अध्ययन, पी.एच.डी. थीसिस।

7– सिद्दीकी, सबा (2002) : जनपद बलिया (उ.प्र.) का ग्रामीण अधिवास रुपान्तरण।

8– चॉदना आर.सी. एण्ड सिद्धू : पापुलेशन ज्योग्राफी'', कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

9– सिंह के.एन.एवं सिंह जगदीश : आर्थिक भूगोल के मूल तत्व'' ज्ञानोदय प्रकाशन।(2008)

10– पाठक, गणेश कुमार : बलिया जनपद के सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण विकास में योगदान'' शोधप्रबन्ध, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

Scanned with OKEN Scanner